मन का इंद्र धनुष गायब नहीं होता !

जीवन क्षणिक है !
ओस जल कण से
जीवन क्षणिक है !
जीवन को महासागर में
दुःख और खुशी,
मधुर और चंचल से
जीवन में पूर्ण
नहीं होना था

क्या जीवन है ?
कुछ समय जीवन को
पूर्ण होना था ?
मैं नहीं मानूँ है ?
मनुष्य नहीं मानूँ !
वहाँ परस्पर प्रेम
और शक्ति का अभाव
जीवन पूर्ण नहीं थी

हमारा प्रकृति ऐसा
ऐसा सुन्दर प्रकृति है!
फूल, फल, पेड़, ऐसा
एक मनोहर प्रकृति है
प्रकृति को मन में
खुश नर्तन है
इस मनोहर से में
प्रकृति मनुष्य को तैयार करना

कोई मनुष्य को मन
में खुश नहीं थी
परस्पर प्रेम नहीं थी
मनुष्य को मन में
शुद्ध भाव को
अलग अलग होता है
इसका कारण क्या है?
मनुष्य को खुशी नहीं माँ?

मनुष्य को मुस्कुराहन
नहीं मालूँ ?
मैं नहीं मालूँ।
इस चोद्य को
उत्तर कैसे हो ?
मैं मालूँ, इस
चोद्य को उत्तर मनुष्य
को मन में अलग होते

परस्पर प्रेम, एकता,
खुश, शांती
समाधान जीवन
पूर्ण होना था
इस शांत, खुश, प्रेम को समय
'मनुष्य को मन में शांत
का वर्ण को इंद्र धनुष
किलना होते हैं'